उत्तर प्रदेश बोर्ड परीक्षा 2025

अर्थशास्त्र (ECONOMICS)

TOP 10 (Part 2)

अति महत्वपूर्ण प्रश्न

10 MARKS वाले प्रश्न

1. कुल उत्पादन, औसत उत्पादन और सीमांत उत्पादन की सचित्र व्याख्या कीजिए। (10)

उत्तर: **कुल उत्पादन (Total Production)**

किसी एक निश्चित समयावधि में उत्पत्ति के साधनों का प्रयोग करके उत्पादित की गई वस्तुओं और सेवाओं की कुल मात्रा को कुल उत्पादन जाता है।

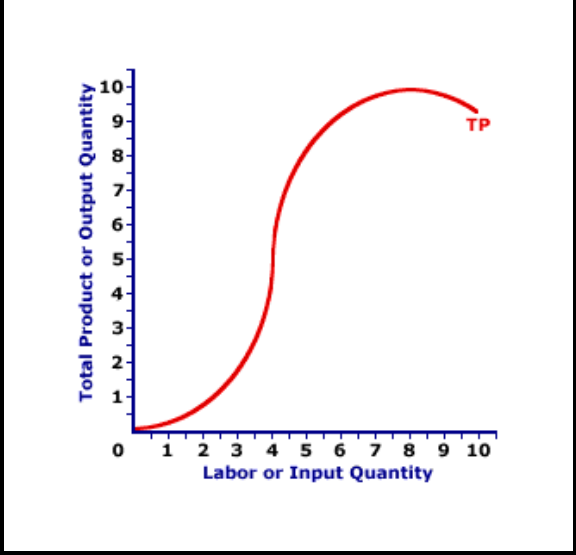

$$TP = AP \times Q$$
$$TP = \Sigma MP$$

सीमांत उत्पादन (Marginal Production)

किसी परिवर्तनशील साधन की एक अतिरिक्त इकाई का यह एक कम इकाई का प्रयोग करने से कुल उत्पादन में जो अंतर आता है उसे उस इकाई का सीमांत उत्पादन कहते हैं।

$$MP = TPn - TPn_1$$

औसत उत्पादन (Average Production)

परिवर्तनशील साधन के प्रति इकाई उत्पादन को औसत उत्पादन कहा जाता है।

कुल उत्पादन को परिवर्तनशील साधनों से भाग देने पर जो राशि प्राप्त होती है, उसे औसत उत्पादन कहा जाता है।

$$AP = \frac{TP}{Q}$$

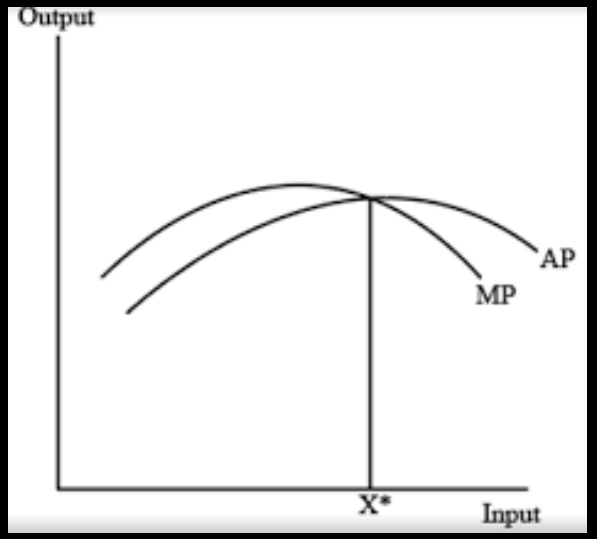

2. कुल लागत, औसत लागत और सीमान्त लागत में चित्र की सहायता से अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: **कुल लागत (Total Cost – TC)**

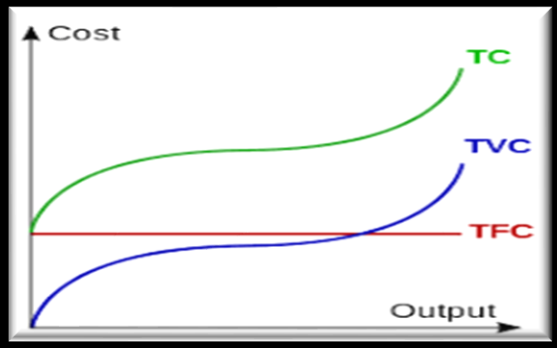

किसी वस्तु की एक निश्चित मात्रा का उत्पादन करने के लिए उत्पादक को जितनी कुल व्यय करने पड़ते हैं, उनके जोड़ को कुल लागत कहते हैं।

TC = TFC + TVC

औसत लागत (Average Cost – AC

किसी वस्तु की प्रति इकाई लागत को औसत लागत कहा जाता है

कुल लागत (TC) को उत्पादन मात्रा (Q) से भाग देकर प्राप्त भागफल को औसत लागत (AC) कहते **हैं।**

$$AC = \frac{TC}{Q}$$

अल्पकाल में औसत लागत (AC) औसत स्थिर लागत (AFC) तथा औसत परिवर्तनशील लागत (AVC) का योग होती है।

AC= AFC+ AVC

सीमांत लागत (Marginal Cost – MC)

सीमांत का अभिप्राय है - **एक अतिरिक्त**।

एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने से कुल लागत में जितनी वृद्धि होती है, उसे उस इकाई विशेष की सीमांत लागत कहते हैं।

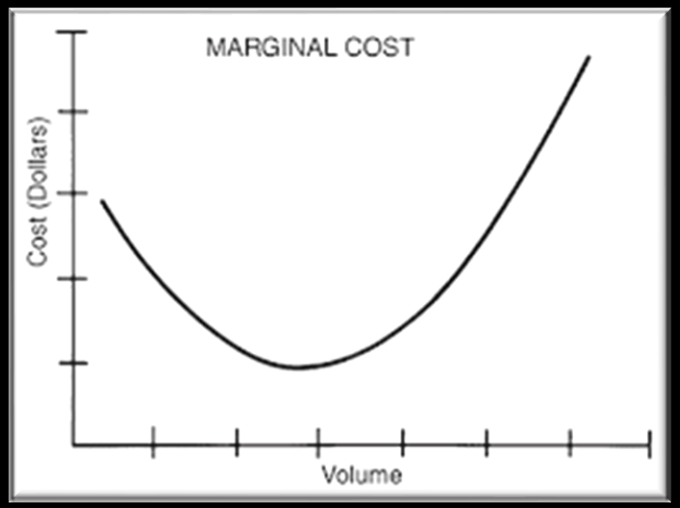

सीमांत लागत केवल परिवर्तनशील लागतों पर निर्भर करती है, स्थिर लागतों पर नहीं।

$$MC_n = TC_n - TC_{n-1}$$

3. इस पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में फर्म के संतुलन की व्याख्या कीजिए (10)

उत्तर: एक फर्म / उत्पादक उस समय संतुलन की स्थिति में होती है जब वह अपने वर्तमान उत्पादन की मात्रा से संतुष्ट होती है।

एक उत्पादक उस समय साम्य में होता है जब उसकी आय अधिकतम होती है तथा हानियां न्यूनतम होती है।

इस प्रकार एक फर्म साम्य की स्थिति में तब कही जाएगी जबकि उसके कुल उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन की कोई परिवर्तन नहीं हो।

मैकोनल के अनुसार, ***"अल्पकाल में एक फर्म उस समय संतुलन में होती है जब उस मात्रा का उत्पादन करती है जिसपर उसके लाभ अधिकतम होते हैं तथा हनियां न्यूनतम होती है"।***

सीमांत आगम (MR) एवं सीमांत लागत (MC) वक्र रीति द्वारा उत्पादक का संतुलन

इस रीति में विभिन्न उत्पादन स्तरों पर सीमांत आगम (MR) तथा सीमांत लागत (MC) का अंतर ज्ञात किया जाता है।

सीमान्त आगम तथा सीमांत लागत का अंतर लाभ को प्रदर्शित करता है।

जब सीमांत आगम (MR) तथा सीमांत लागत (MC) से अधिक है तब उत्पादन में वृद्धि लाभप्रद है। जब MR तथा MC बराबर होते है उस बिंदु पर लाभ अधिकतम होता है।

और इसे समविच्छेद बिंदु कहा जाता है। जबकि जब सीमांत लागत सीमांत आगम से अधिक हो तब उत्पादक को हानि होगी।

इस प्रकार पूर्ण प्रतियोगिता में उत्पादनक या फर्म के संतुलन के लिए दो प्रमुख शर्तें हैं:

1. **MR = MC**
2. **सीमांत लागत वक्र (MC) सीमांत आगम वक्र (MR) को नीचे से काटे।**

चित्र

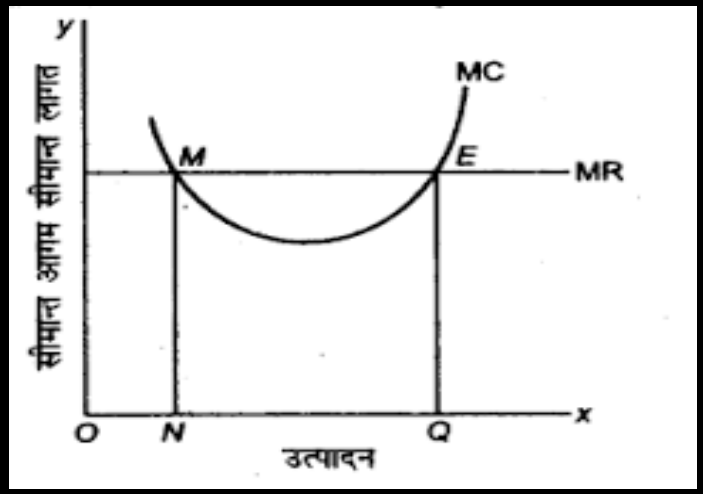

4. पैमाने के प्रतिफल से क्या आशय हैं? पैमाने की प्रतिफल की तीन अवस्थाएं बताएं।

उत्तर: पैमाने के प्रतिफल के नियम के अनुसार ,उत्पत्ति के सभी साधनों में एक निश्चित अनुपात में परिवर्तन करने पर उत्पादन के पैमाने में भी परिवर्तन होता है। पैमाने तीन प्रतिफल है

पैमाने के बढ़ते प्रतिफल का नियम

जब सभी उत्पत्ति के साधनों को एक निश्चित अनुपात में बढ़ाया जाता है ,तब पैमाने के बढ़ते प्रतिफल के अंतर्गत उत्पादन कुछ निश्चित अनुपात से अधिक अनुपात में बढ़ जाता है।

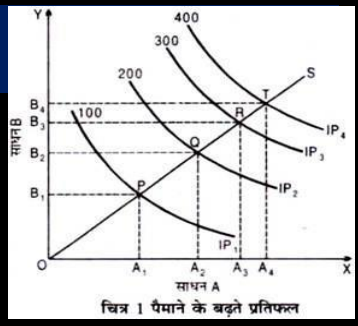

चित्र 1 पैमाने के बढ़ते प्रतिफल

पैमाने की स्थिर प्रतिफल का नियम

पैमाने की स्थिति प्रतिफल की दशा में उत्पत्ति के सभी साधनों को जीस अनुपात में बढ़ाया जाता है। उत्पादन भी ठीक उसी अनुपात में बढ़ता है।

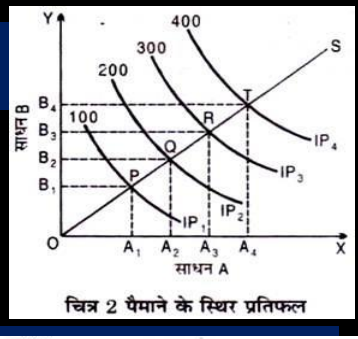

चित्र 2 पैमाने के स्थिर प्रतिफल

पैमाने की घटते प्रतिफल का नियम

इस नियम के अनुसार उत्पत्ति के साधनों को जिस अनुपात में बढ़ाया जाता ह उत्पादन में उससे कम अनुपात में वृद्धि होती है

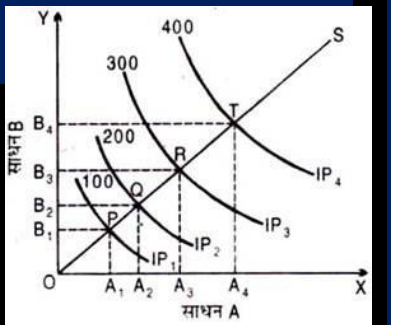

चित्र 3 पैमाने के घटते प्रतिफल

5. भुगतान संतुलन किसे कहते हैं? इसकी प्रमुख विशेषताएं बताएं।

उत्तर: किसी देश और बाकी दुनिया के बीच होने वाले सभी आर्थिक और मौद्रिक लेन-देन का रिकॉर्ड, भुगतान संतुलन (बीओपी) कहलाता है. इसे अंतरराष्ट्रीय भुगतान संतुलन भी कहा जाता है. यह किसी देश की अर्थव्यवस्था के बाकी दुनिया के साथ लेन-देन का सारांश होता है. बीओपी की गणना आम तौर पर हर तिमाही और हर साल की जाती है.

भुगतान संतुलन की प्रमुख विशेषताएं:

- बीओपी में निजी और सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों के सभी लेन-देन शामिल होते हैं.
- बीओपी से पता चलता है कि किसी देश में कितना पैसा आ रहा है और कितना जा रहा है.
- बीओपी से पता चलता है कि देश के पास आयातों का भुगतान करने के लिए पर्याप्त धन है या नहीं.
- बीओपी से पता चलता है कि देश के पास विकास के लिए पर्याप्त आर्थिक उत्पादन है या नहीं.
- बीओपी से पता चलता है कि देश की मुद्रा की मांग और आपूर्ति क्या है.
- बीओपी से पता चलता है कि देश की मुद्रा अन्य देशों के मुकाबले स्वीकार्य है या अवमूल्यित हो रही है.
- बीओपी से पता चलता है कि देश वैश्विक मौद्रिक विकास में किस स्थिति में है

6.व्यापार संतुलन एवं भुगतान संतुलन में चार अंतर लिखिए (4)

उत्तर: भुगतान संतुलन और व्यापार संतुलन के बीच अंतर

आधार	भुगतान का संतुलन	व्यापार का संतुलन
अर्थ	भुगतान संतुलन एक निर्दिष्ट समय अवधि, जैसे कि एक तिमाही या एक वर्ष, में एक देश और बाहरी दुनिया की संस्थाओं के बीच सभी लेनदेन का विवरण है।	व्यापार संतुलन से तात्पर्य वस्तुओं के निर्यात और आयात के बीच के अंतर से है।
अवयव	भुगतान संतुलन में दृश्यमान वस्तुएँ, अदृश्य वस्तुएँ, एकतरफा हस्तांतरण और पूंजी हस्तांतरण शामिल हैं।	व्यापार संतुलन में केवल दृश्यमान वस्तुएँ शामिल होती हैं।

आधार	भुगतान का संतुलन	व्यापार का संतुलन
अभिलेख	पूंजीगत प्रकृति के सभी लेन-देन भुगतान संतुलन में शामिल होते हैं।	यह केवल वस्तुओं से संबंधित लेनदेन को रिकॉर्ड करता है।
पूंजी अंतरण /लेनदेन	पूंजीगत प्रकृति के सभी लेन-देन भुगतान संतुलन में शामिल होते हैं।	पूंजीगत प्रकृति के लेनदेन को व्यापार संतुलन में शामिल नहीं किया जाता है।
दायरा	भुगतान संतुलन एक व्यापक अवधारणा है और इसमें व्यापार संतुलन भी शामिल है।	व्यापार संतुलन एक संकीर्ण अवधारणा है और भुगतान संतुलन खाते का एक हिस्सा है।

7. केंद्रीय बैंक अर्थव्यवस्था में साख पर नियंत्रण किस प्रकार करता है? व्याख्या कीजिये।

उत्तर: **केंद्रीय बैंक द्वारा साख नियंत्रित करने के लिए प्रयोग किये गए उपकारों को दो वर्गों में बनता गया है-**

1. **परिमाणात्मक साख नियंत्रण**
2. **चयनात्मक साख नियंत्रण**

1. **परिमाणात्मक साख नियंत्रण**- इसके प्रमुख विधियाँ इस प्रकार है -

I) **बैंक दर नीति** - बैंक दर वह है जिस पर केंद्रीय बैंक सदस्य बैंकों के प्रथम श्रेणी के व्यपारिक बिलों की पुन:कटौती करता है और उन्हें ऋण देता है। साख के विस्तार करने के उद्देश्य से बैंक दर को घटा दिया जाता है जबकि साख नियंत्रण के लिए बैंक दर को बढ़ा दिया जाता है ।

II) **खुले बाजार की क्रियाएं:** खुले बाजार की क्रियाओं से अभिप्राय केंद्रीय बैंक के द्वारा मुद्रा बाजार में सरकारी प्रतिभूतियो का क्रय विक्रय करना है । साख के नियंत्रण के प्रतिभूतियों का विक्रय किया जाता है जबकि साख के विस्तार के लिए क्रय किया जाता है ।

III) **नकद कोष अनुपात नीति (CRR):** देश का प्रत्येक व्यपैक बैंक अपनी कुल जमाओं का एक निश्चित प्रतिशत केंद्रीय बैंक के पास अनिवार्य रूप से करना पढ़ता है उसे नकद कोष अनुपात कहते है। साख के विस्तार

करने के उद्देश्य से नकद कोष अनुपात को घटा दिया जाता है जबकि साख नियंत्रण के लिए नकद कोष अनुपात को बढ़ा दिया जाता है ।

IV) **सांविधिक तरलता अनुपात (SLR): प्रत्येक व्यापारिक बैंक को अपनी कुल जमाओं का एक निश्चित प्रतिशत स्वयं के पास तरल रूप में जमा** रखना पढता है जिसे सांविधिक तरलता अनुपात कहते है । साख के विस्तार करने के उद्देश्य से सांविधिक तरलता अनुपात को घटा दिया जाता है जबकि साख नियंत्रण के लिए सांविधिक तरलता अनुपात को बढ़ा दिया जाता है ।

2. चयनात्मक साख नियंत्रण-

I) **सीमांत आवश्यकताओं या मार्जिन में परिवर्तन -** जब विशेष वस्तु के लिए साख का संकुचन करना होता है तो केंद्रीय बैंक उसकी मार्जिन आवश्यकता को बढ़ा देता है और इसके विपरीत साख के विस्तार के लिए मार्जिन आवश्यकता को घटा देता है।

II) **साख की राशनिंग :-** केंद्रीय बैंक साख की राशनिंग चार प्रकार से करता है -

- विभिन्न बैंकों को दिए जाने वाले ऋण में कमी कर सकता है ।
- विभिन्न बांको को दी जाने वाली साख का कोटा निश्चित कर सकता है ।
- किसी विशेष बैंक को रुपया उधर देने से इंकार कर देता है ।
- केंद्रीय बैंक उद्योगों और व्यवसायियों को दी जाने वाली साख की सीमा निश्चित कर सकता है ।

III) **प्रत्यक्ष कार्यवाही :-** जब केंद्रीय बैंक यह देखता है कि कोई बैंक उसकी नीति के विरुद्ध कार्य कर रहा है तो वह प्रत्यक्ष कार्यवाही जैसे आर्थिक दंड लगाना, लाइसेंस निरस्त करना आदि कर सकता है ।

8. समग्र मांग से अब क्या समझते हैं समग्र मांग के विभिन्न घटकों की व्याख्या कीजिये।

उत्तर: **समग्र मांग :-** एक अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और वस्तुओं की सम्पूर्ण मांग को ही सामूहिक मांग कहते है । यह अर्थव्यवस्था के कुल व्यय के रूप में व्यक्त की जाती है ।

कीन्स के अनुसार सामूहिक मांग का अर्थ उस आय से लिया जाता है जो सभी फर्में (उत्पादक) एक निर्दिष्ट रोजगार स्तर पर अपनी वस्तुओं को बेचकर प्राप्त करने की आशा करती है या यह वह कुल व्यय है जो देश के सभी उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं की खरीदने के लिए करते है।

इस प्रकार ,

सामूहिक मांग = उपभोग व्यय + विनियोग व्यय

AD = C + I

आय (Y)	उपभोग (C)	विनियोग (I)	सामूहिक मांग (AD = C+I)
0	20	20	40
20	30	20	50
40	40	20	60
60	50	20	70
80	60	20	80
100	70	20	90

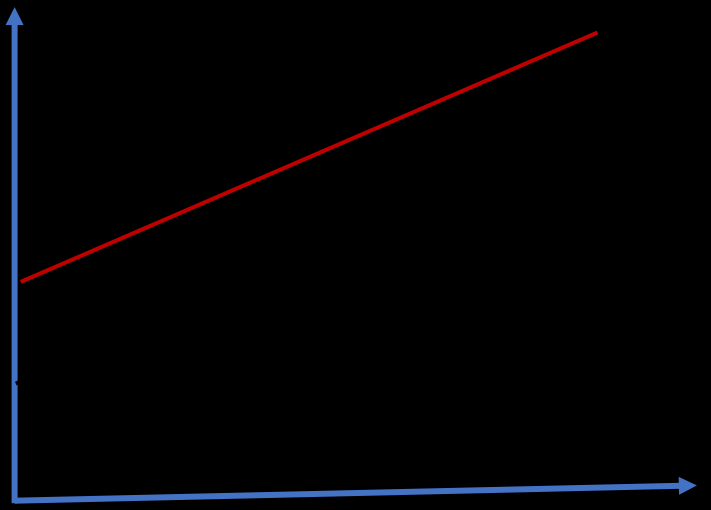

सामूहिक मांग के अवयव :-

1. **बंद अर्थव्यवस्था में -**

AD = C + I

(समग्र मांग = उपभोग + विनियोग)

2. **खुली अर्थव्यस्था में -**

AD = C + I + G + (X-M)

C - निजी उपभोग व्यय

I - निजी एवं सार्वजानिक निवेश

G - सरकारी व्यय

X-M - शुद्ध निर्यात (निर्यात - आयत)

9. मुद्रा की पूर्ति से क्या तात्पर्य है? भारतीय रिज़र्व बैंक के द्वारा प्रकाशित मुद्रा की पूर्ति की वैकल्पिक मापों को परिभाषित कीजिये ।

उत्तर:- **मुद्रा की पूर्ति :-** मुद्रा पूर्ति से अभिप्राय किसी समय विशेष पर एक देश में प्रचलित वैधानिक मुद्रा की कुल मात्रा से है ।

वैधानिक मुद्रा में देश में चलन में आये नोट व सिक्के शामिल है जोकि विनिमय के माध्यम के रूप में काम में लाये जाते है ।

भारतीय रिज़र्व बैंक के मुद्रा की पूर्ति के माप :-

भारतीय रिज़र्व बैंक ने आरम्भ में मुद्रा की पूर्ति के चार वैकल्पिक मापों M1, M2, M3 तथा M4 का प्रयोग किया था ।

इन मापों से संबंधित जानकारी अप्रैल, 1977 से नियमित रूप से रिज़र्व बैंक प्रदान करता है । संक्षेप में ये धारणाये निम्नलिखित है :-

1. M1 माप = M1 = C + DD + OD

यहाँ,

C- सिक्को और नोटों के रूप में जनता के पास करेंसी

DD- बैंकों की मांग जमा (इन जमाओं को मांगने पर चैकों द्वारा या तो निकाला जा सकता है या किसी को हस्तांतरित किया जा सकता है)।

OD - अन्य जमायें । इसमें निम्नलिखित जमायें सम्मिलित होती है -

A) RBI के पास सार्वजानिक वित्तीय संस्थाओं जैसे IDBI की मांग जमायें

B) RBI के पास विदेशी केंद्रीय बैंकों तथा विदेशी सरकारी बैंकों की मांग जमायें ।

C) अनतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं जैसे IMF तथा विश्व बैंक की मांग **जमायें।**

M1 मुद्रा माप को RBI ने संकुचित मुद्रा का माप दिया है ।

2. M2 माप = M1 + SD

M2 के अंतर्गत M1 के सभी घटको के साथ साथ डाकघर में जनता की बचतों (SD) को भी सम्मिलित किया जाता है ।

3. M3 माप = M1 + FD

M3 विस्तृत मुद्रा है।इसी को सामान्य मुद्रा मापक के रौंप में प्रयोग किया जाता है । इसमें M1 के सभी घटकों के साथ साथ व्यापारिक बैंकों में लोगों की शुद्ध सावधि जमाओं (FD) को भी सम्मिलित करते है ।

4. M4 माप = M3 + डाकघरों में कुल जमायें (राष्ट्रीय बचत पत्रों को छोड़कर)

M4 माप M3 माप की तुलना में एक वृहद् अवधारणा है इसमें M3 के सभी अवयवों के आलावा डाकघर की बचतों (राष्ट्रीय बचत पत्रों को छोड़कर) को सम्मिलित किया जाता है ।

10. परिवर्ती अनुपात नियम की रेखाचित्र की सहायता से व्याख्या कीजिए। (4)

उत्तर: अल्पकाल में जब फर्म उत्पत्ति के कुछ साधनों को स्थिर रखकर अन्य साधनों की मात्रा में परिवर्तन करती है, तब उत्पादन की मात्रा में जो परिवर्तन होते हैं उन्हें उत्पत्ति के नियमों के नाम से जाना जाता है। उत्पत्ति के यह नियम तीन होते हैं:

साधन के बढ़ते प्रतिफल अथवा उत्पत्ति वृद्धि नियम

जब उत्पत्ति के कुछ साधनों को स्थिर रखकर एक साधन की मात्रा को परिवर्तित किया जाता है, तब उत्पादन में वृद्धि होती है। इससे ***कुल उत्पादन (TP)*** में वृद्धि होती चली जाती है। इसीलिए इसे उत्पत्ति वृद्धि नियम कहा जाता है।

इस दशा में ***सीमांत उत्पादन (MP)*** और ***औसत उत्पादन (AP)*** दोनों ही बढ़ते हैं।

श्रम(L)	TP	AP	MP
1	4	4	4
2	10	5	6
3	18	6	8

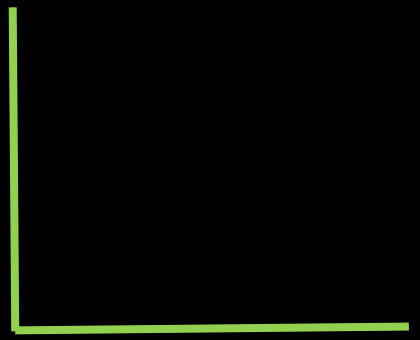

साधन के स्थिर प्रतिफल अथवा समता नियम

साधन के समान प्रतिफल से अभिप्राय उच्च स्थिति से हैं जिसमें परिवर्तन साधन की अतिरिक्त इकाइयों का प्रयोग करने से उनकी सीमांत उत्पादकता में वृद्धि नहीं होती। इस स्थिति में सीमांत उत्पादन स्थिर हो जाता है, जिसके फलस्वरूप कुल उत्पादन में सामान दर से वृद्धि होती है।

श्रम(L)	TP	AP	MP
1	30	30	30
2	60	30	30
3	90	30	30

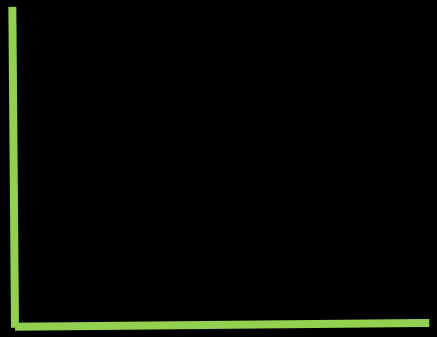

साधन के घटते प्रतिफल अथवा उत्पत्ति ह्रास नियम

साधन के घटते प्रतिफल की दशा तब उत्पन्न होती है जब परिवर्तनशील साधन का सीमांत उत्पादन घटने लगता है, जिसके परिणामस्वरूप कुल उत्पादन घटती दर से बढ़ता है। इस दशा में उत्पादन की सीमांत लागत बढ़ती चली जाती है।

श्रम(L)	TP	AP	MP
1	30	30	30
2	50	25	20
3	65	21.6	15
4	65	16.25	0

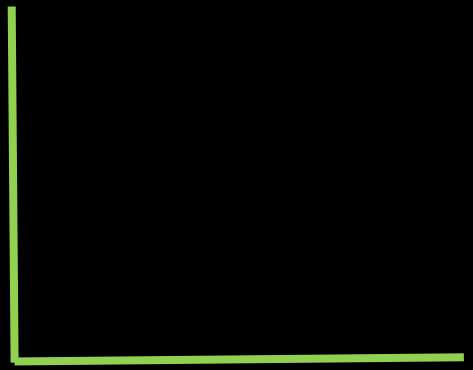

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

LIKE AND ***SHARE*** The Video

SUBSCRBE THE CHANNEL

THE ECONOMICS GURU

FOLLOW ME ON INSTAGRAM / @theeconomicsguru

FOLLOW ME ON FACEBOOK / NAKUL DHALI

For PDF visit my website: www.theeconomicsguru.com